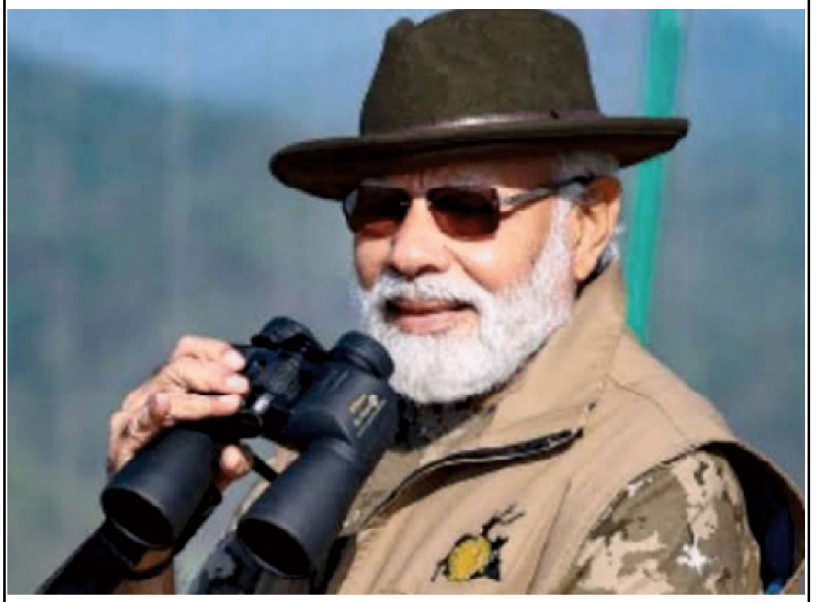

''राष्ट्र को विश्व गुरु बनाना है और
इसकी शुरूआत काशी से करनी है ''

– प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

असामान्य विश्व

(Unusual Universe)

17th edition-2023

Author

Suresh Kumar

Creative Input

Ravi Kumar Setia

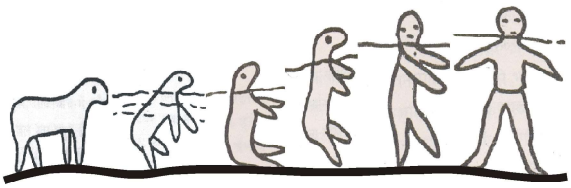

असामान्य विश्व प्रकाशन,
सी–106 तिलक नगर, जयपुर–302004
फोन–0141–4011921, 9660462862

Web : www.asamanyavishwa.com
Email : asamanyavishwa123@gmail.com
Mob : +91 9001888882,9660462862

सुरेश कुमार – 0141-4011921

© लेखक

L- 19191/2001

ISBN No. 978-93-5156-732-5

प्रथम संस्करण	:	01-2000
द्वितीय संस्करण	:	05-2000
तृतीय संस्करण	:	08-2000
चतुर्थ संस्करण	:	02-2001
पंचम संस्करण	:	05-2001
छठा संस्करण	:	09-2001
सातवां संस्करण	:	01-2002
आठवां संस्करण	:	06-2006
नवां संस्करण	:	11-2006
दसवां संस्करण	:	02-2007
ग्यारहवां संस्करण	:	08-2007
बारहवां संस्करण	:	03-2008
तेरहवां संस्करण	:	02-2012
तेरहवां संशोधित संस्करण	:	12-2012
चौदहवां संस्करण	:	10-2013
पंद्रवाँ संस्करण	:	06-2014
सोलहवां संस्करण	:	02-2016

सत्रहवां सस्करण–2023 मूल्य : **200/-**

सन एन सन प्रेस, 311, विजय पथ, तिलक नगर, जयपुर

विषय सूची

क्रम संख्या	अध्याय का नाम	पृष्ट संख्या
1.	ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति : पृथ्वी की उत्पत्ति	14–45
2.	जीवन की उत्पत्ति	46–97
3.	समाचार पत्रों में दिया गया कवरेज एव प्रमुख प्रतिक्रियाएं	98-128

असामान्य विश्व 17वां संस्करण, 2023
अपनी बात

यह गौरव हमारा है। हम लोग हैं, जो कहते हैं यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे, कितनी बड़ी सोच हैं, जो ब्रह्माण्ड में हैं वो हर जीव मात्र में हैं, यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे, यह कहने वाले हम लोग हैं। हम वो लोग हैं जिसने दुनिया का कल्याण देखा है, हम जग कल्याण से जन कल्याण के राही रहे हैं। जन कल्याण से जग कल्याण की राह पर चलने वाले हम लोग जब दुनिया की कामना करते हैं, तब कहते हैं – सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः सबके सुख की बात सबके आरोग्य की बात करना यह हमारी विरासत है और इसलिए हम बड़ी शान के साथ हमारी इस विरासत का गर्व करना सीखें, यह प्रण शक्ति है हमारी, जो हमें 25 साल के सपने पूरा करने के लिए जरूरी है। – नरेन्द्र मोदी (स्वतंत्रता दिवस, 2022)

श्री नरेन्द्र मोदी जब से प्रधान मंत्री बने हैं तब से अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मंचों और अवसरों पर वैदिक विज्ञान पर गर्व करते हुए इसकी वैज्ञानिकता को शौध, अनुसंधान और प्रयोगों से साबित करके विश्व के सामने लाकर राष्ट्र को विश्व गुरु बनाने का आव्हान करते आ रहे हैं। परन्तु अब तक विश्व का कोई भी वैज्ञानिक या संस्थान वैदिक विज्ञान के किसी भी भाग की वैज्ञानिकता को आधुनिक विज्ञान की भाषा में बदलकर इसे प्रयोगिक स्वरूप में नहीं बदल पाया। अपनी सीमित बुद्धि से वैदिक विज्ञान के थोड़े से अंश को जान और समझकर उसे आधुनिक विज्ञान की भाषा में बदलकर असामान्य विश्व परिकल्पना विकसित की। इसे शौध और अनुसंधान द्वारा प्रयोगों से साबित करके आधुनिक विज्ञान को नई दिशा और दशा दी जाएगी, ताकि वैदिक विज्ञान का उपयोग सारे प्राणियों के स्वास्थ्य सहित पर्यावरण के संरक्षण के लिए किया जा सके।

वैदिक लोक ''यत् पिण्डे तत् बह्माण्डे'' का शाब्दिक अर्थ है कि जैसा शरीर है वैसा ही ब्रह्माण्ड है, जो ब्रह्माण्ड में है वह हर शरीर में है। ''शरीर ही ब्रह्माण्ड है'' मैने इस वैदिक वाक्य का अर्थ यह जाना कि प्राणी और अन्तरिक्षीय पिण्ड समान तरीके से जन्मते हैं, बढ़ते हैं और फिर मर जाते हैं। एक बार एक प्राणी बनने के बाद उसी के द्वारा ठीक उसके जैसी सन्तानों का शिशु रूप में जन्म होता रहता है जो

विकसित होकर उसी तरह बन जाते हैं। इसके आधार पर यह परिकल्पति होता है कि ठीक इसी तरह एक अन्तरिक्ष पिण्ड बनने के बाद उसके द्वारा वैसे के वैसे अन्तरिक्षीय पिण्ड शिशु रूप में पैदा होते रहते हैं, फिर वे विकसित होकर ठीक उसी के समान बन जाते हैं। जैसे दो हैप्लाइड सेलों या गेमेटों के मिलने से एक फर्टाइल सेल या जाइगोट बनता है जो एक पूरे शरीर में विकसित हो जाता है। वैसे ही दो अनस्टेबल हिलियम एटमों के फ्यूजन से एक स्टेबल हिलियम बनकर एक पूरा स्पेस ओबजक्ट बन जाता है, फिर इस ओबजक्ट से बने अनस्टेबल हिलियम एटमों के फ्यूजन से एक स्टेबल हिलियम एटम बनने से दूसरा स्पेस ओबजक्ट बनता है। फिर वह भी अपने पैरेन्ट के समान ही बड़ा हो जाता है। इसी अवधारणा को असामान्य विश्व परिकल्पना में वैज्ञानिक तथ्यों और प्रमाणों के साथ परिकल्पित किया गया है। इस परिकल्पना को वैज्ञानिक प्रयोगों से साबित करके स्पेस ओबजक्टों के निर्माण और विकास के वैदिक विज्ञान को प्रमाणित किया जाएगा।

इसी तरह ब्रह्मा जी ने समस्त प्राणी और पादप प्रजातियों के शुरुआती युगलों ''प्रजापति'' को पृथ्वी से बाहर किसी द्वीप या लोक पर उत्पन्न किया। फिर वे उस लोक से पृथ्वी तक ट्रांसपोर्ट हुए। पृथ्वी पर आकर वे विकसित होकर युवा हुए और यौन समागम से अपनी जैसी सन्तानें पैदा की। इस वैदिक अवधारणा को हम वैज्ञानिक अवधारणा में बदलते हैं कि जीवन के बीज ''जीनों'' के सृजन के लिए पृथ्वी के चेंजिंग मैग्नेटिक फ्लक्स से इनडयूज्ड रासायनिक प्रक्रियांए पोलर लोअर अर्थ ओरबिट में एक हिमखण्ड के द्रवित केन्द्र पर हुई। फिर यह हिमखण्ड पृथ्वी के समुद्र में अवतरित हुआ। हिमखण्ड द्रवित होने पर पर्यावरणीय प्रतिक्रिया के रूप में जीनों से उर्वर कोशिका युगल संश्लेषित हुए। प्रत्येक उर्वर कोशिका युगल युवा प्राणी युगल में विकसित होकर यौनसमागम से एक प्राणी प्रजाति की स्थापना करता है। इस तरीके से पृथ्वी पर अरबों प्राणी और पादप प्रजातियों की स्थापना हुई। इस असमान्य विश्व पकिल्पना को वैज्ञानिक प्रयोगों से साबित करके जीवन की उत्पत्ति के वैदिक विज्ञान को प्रमाणित किया जाएगा।

असामान्य विश्व परिकल्पना अपने प्रथम संस्करण–2000 के प्रकाशन के साथ विकसित होना शुरु हुई। इसे वैज्ञानिक तथ्यों द्वारा समर्थित करने के प्रयास में अनभिज्ञता से उपजी अवधारणाएं खारिज होती गई और अर्थ साईंसेस के बेसिक्स के अध्ययन से उपजी वैज्ञानिक समझ से नई अवधारणाएं बनती गई। वैज्ञानिक तथ्यों को स्वतंत्र रूप से रिंएप्लाई करते हुए रिअरेन्ज करने से ब्रह्माण्ड और जीवन उत्पत्ति हेतु एक पूरी तरह नया और अलग मॉडल परिकल्पित होता गया।

जयपुर स्थित विज्ञान अध्ययन और अनुसंधान से जुड़े संस्थानों के सैंकड़ों विज्ञान शिक्षकों, वैज्ञानिकों और अधिकारियों को इसके प्रत्येक संस्करण की प्रतियां निशुल्क पहुंचाकर उनकी प्रतिक्रिया व मार्गदर्शन लिया गया। इससे उपजी अद्वितीय वैज्ञानिक समझ प्रत्येक अगले संस्करण में समायोजित होती गई। यह प्रक्रिया प्रथम संस्करण–2000 से शुरु होकर 16वें संस्करण–2016 तक जारी रही।

ब्रह्माण्ड और जीव विज्ञान की बेसिक समझ आनलाइन क्लासेस की सहायता से अत्यधिक इम्प्रूव हुई। रितु रट्टेवाल, बी देव, डा॰हैदी, अलख पांडे, ''फिजिक्सवाला'', डेविड टॉग, जैसे शिक्षकों, विज्ञान टीवी इन्डिया और कास्मिक दुनिया जैसे चैनलों ने सूक्ष्म और जटिल जीव वैज्ञानिक, जीयोग्राफिकल और भौतिकि सूचनाओं को एक एप्लीकेबल समझ में बदल कर उन्हें फील कराते हुए प्रस्तुत किया है। इनकी सहायता से असामान्य विश्व परिकल्पना एक स्पष्ट वैज्ञानिक फ्रेमवर्क में बदली है। मित्र रवि सेतिया और लोकेश कुमावत के साथ हुए डिस्कशन से परिकल्पना प्रयोग योग्य बनी।

माँ और पिता ने पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुक्त रखते हुए मुझे इस कार्य के लिए निरन्तर तत्पर बनाए रखा। पत्नि सुमन ने उत्साहजनक प्रेममय वातावरण बनाए रखा। मेरे चारों बच्चे और उनके जीवन साथी मेरे साथ मित्रवत रहकर मुझे अपार मानसिक ऊर्जा प्रदान की।

ईसरो और नासा जैसे संस्थान, केन्द्र सरकार, राज्य सरकारें और एलन मस्क जैसे इन्नोवेटर वैज्ञानिक इस सेल्फ एविडेंट परिकल्पना को प्रयोगों द्वारा साबित करने हेतु शोध और अनुसंधान शुरु करने की जिम्मेदारी लेंगे।

असामान्य विश्व अभियान में सहयोगी और मार्गदर्शक रहे सभी मित्रों, विज्ञान शिक्षकों और संस्थानों का आभार प्रकृट करते हुए 17वां संस्करण विज्ञान समुदाय, राज्य सरकारों सहित केन्द्र सरकार के समक्ष उनकी प्रतिक्रियाओं और परिकल्पना को साबित करने हेतु आवश्यक प्रयोग, शौध और अनुसंधान शुरु करने के लिए उनके मार्गदर्शन और सहयोग के लिए प्रस्तुत है।

स्थानः जयपुर

दिनांकः 10.08.2023

लेखक

सुरेश कुमार

(भूमिकाः प्रथम संस्करण, 2000)
प्रेरणाएं

निश्चल बचपन से निकलकर जैसे ही शिक्षा के सागर में मस्तिष्क उलझना शुरू हुआ, तो महसूस हुआ कि ज्ञान का सागर कितना विशाल है। नए ज्ञान रूपी नदियां निरन्तर इसमें समा रही हैं। तभी से एक नदी बनकर इस सागर की विशालता में शामिल होने की इच्छा मन में बैठ गयी।

इस इच्छा का युवावस्था के दौरान प्राप्त कुछ अनुभूतियों ने एक खाका प्रदान किया। इस खाके में रंग भरन का प्रयास परिस्थितियों ने किया। परन्तु एक नदी का रूप नहीं उभर पाया। महसूस किया कि अभी इस नदी बनने में कई छोटे–बड़े नदी–नालों का सहयोग आवश्यक है। सहयोग प्राप्त करने के लिए एक छोटी सी धारा बनने का प्रयास आवश्यक है। छोटी सी धारा बनने के लिए सर्वप्रथम मेरी मॉ ने प्ररित किया। बाद में मेरे सम्पर्क मे आये विभिन्न ज्ञानी लोगों ने। मेरे लिए इन अविस्मरणीय लोगों में कैलाश चन्द्र जौहरी का योगदान विशिष्ट है। इसके बाद इस धारा को आगे बढ़ाने में मेरे मित्र स्व. प्रवीण कुमार शर्मा, श्री नाथूलाल शर्मा, तथा रमा शंकर शर्मा, डॉ॰ के.पी. शर्मा, डा॰ स्वदेश गक्खर व डॉ॰ विभा त्यागी का उत्साहवर्द्धन महत्वपूर्ण रहा।

लेखन की शुरुआत मेरी मित्र किरण की प्रेरणा से हुई। मेरी पत्नी सुमन ने चिन्तन जारी रखने के अवसर मेरे लिए उपलब्ध रखे।

अन्य कई ज्ञानी व्यक्तियों ने प्रत्यक्ष व परोक्ष सहयोग देकर इस विचाार को एक छोटी सी धारा बना दिया और यह बहने लगी अपने गन्तव्य की ओर।

प्रस्तुत पुस्तक ''असामान्य विश्व'' में मैने प्रकृति को नए प्रकार से समझने और यह जानने का प्रयास किया है कि सृष्टि क्यों और कैसे अस्तित्व में आयी।

प्रकृति को समझने का मेरा यह प्रयास बिना अन्य विद्वानों के सहयोग के अधूरा रहेगा। पाठक विद्वान जन मेरे इस प्रयास की आलोचना व सुझाव देकर इसे सही दिशा दे सकेंगे।

मैने ''असामान्य विश्व'' में सभी वर्गों के पाठकों को इसे बताने का प्रयास अपने सीमित शब्दज्ञान व अभिव्यक्ति क्षमता के अनुसार किया है। अधिकाधिक लोगों को समझाने के लिए इसे यथासंभव लघु रूप में लिखा है। इसे विस्तारपूर्वक अगले संस्करण में सभी वर्ग के पाठकों की प्रतिक्रिया प्राप्त होने के बाद लिखने का प्रयास करूंगा।

आशा है कि सभी पाठक नए प्रकार की इस सोच में शामिल होकर उत्साहवर्द्धन करेंगे।

1.1.2000 सुरेश कुमार

आमुख
(भूमिका ग्यारहवां संस्करण)

जनवरी, 2000 में प्रकाशित असामान्य विश्व के प्रथम संस्करण के प्रकाशन के उपरान्त जीव वैज्ञानिक शिक्षकों से निरन्तर मार्गदर्शन ने एक दार्शनिक विचार को धीरे–धीरे अध्ययन का स्वरूप प्रदान कर एक वैज्ञानिक परिकल्पना का निर्माण किया, जिसे प्रयोग व परीक्षण द्वारा परखा जा सकता हैं। असामान्य विश्व में उद्विकसित होने वाले विचार को एक प्रायोगिक वैज्ञानिक आधार प्रदान करने के लिए ऐसे समाज मनीषी साधुवाद के पात्र है। पिछले संस्करणों पर पाठकों ने सुझाव दिया था कि असामान्य विश्व में प्रस्तुत प्राणी उद्विकास सम्बंधी परिकल्पना के साथ आधुनिक विज्ञान व हमारी प्राचीन मान्यताओं का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करने से अवधारणाएं प्रायोगिक स्वरूप ग्रहण कर लेती हैं। प्रस्तुत संस्करण में परिकल्पनाओं को अधिक प्रयोगिक स्वरूप प्रदान करते हुए हमारे प्रचीन गौरवमयी हिन्दुत्व को आधुनिक विज्ञान की प्रयोगिक कसौटी पर परखने की दृष्टि से प्रस्तुत हैं। हिन्दुत्व की यह वैज्ञानिक व्याख्या प्राचीन भारतीय ज्ञान 'वैदिक विज्ञान' तथा भारत की विश्व गुरु की गरिमा को वैज्ञानिक रूप से पुनः स्थापित कर भारत को अपने ज्ञान विज्ञान के साथ विश्व की एक महाशक्ति का दर्जा प्रदान कर देगी तथा यह आधुनिक विज्ञान को एक दिशा देने में सक्षम है।

प्रस्तुत संस्करण आम पाठकों के समक्ष उनके गूढ़ मार्गदर्शन द्वारा राष्ट्र व व्यक्ति निर्माण हेतु प्रस्तुत है। आशा है आप भी अपने अमुल्य सुझाव, आलोचनाएं तथा विश्लेषण भेजकर इस अथक कार्य में भागीदार बनेंगे।

दिनांक 8 अगस्त 2007

सुरेश कुमार

प्रस्तावनाः 15वां संस्करण–2014

''देश को विश्व गुरु बनाने के लिए बनारस को राष्ट्र गुरु बनाना होगा, देश को साफ सुथरा बनाना है और इसकी शुरुआत काशी से होनी चाहिए''

श्री नरेन्द्र मोदी

आम चुनावों में भाजपा की अप्रत्याशित जीत के अवसर पर की गई गंगा–माता की आरती के अवसर पर 17 मई 2014 को हमारे सबसे अद्भुत प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने पहले संकल्प में देश को विश्व गुरु बनाने और इसकी शुरुआत काशी से करने का आव्हान उपर्युक्त शब्दों में किया। श्री मोदी पहले प्रधान मंत्री हैं जिन्होंने शपथ ग्रहण करने से पूर्व ही हमारे राष्ट्र को 'विश्व गुरु' बनाने संकल्प लिया और सारे देश वासियों से इसमें शामिल होने का आव्हान किया। इस महान संकल्प के अनुरूप कि श्री मोदी के नेतत्व में हमारा देश वैज्ञानिक उत्थान की राह पर चलेगा, पश्चिमी विज्ञान पर निर्भरता समाप्त करेगा, अपना मौलिक विज्ञान विकसित करेगा, वैदिक विज्ञान को वैज्ञानिक तरीके से पुनः स्थापित करेगा, हिन्दुत्व जीवन शैली का वैश्विक प्रसार करेगा और मौलिक ज्ञान–विज्ञान का विकास करेगा। मौलिक विज्ञान के विकास के बलबूते पर हमारा भारत पूरे विश्व का वैज्ञानकि नेतृत्व करेगा और विश्व महाशक्ति व विश्व गुरु बनेगा। 26 मई 2014 को दिल्ली में शपथ ग्रहण समारोह के अवसर पर राजस्थान की मुख्य मंत्री वसुंधरा राजे ने श्री मोदी के नेतृत्व में भारत के विश्व महाशक्ति के रूप उभरने की कामना की। इन दोनों महान संकल्पों में छोटा सा योगदान देने के लिए असामान्य विश्व का यह 15वां संस्करण–2014 समर्पित है।

''हम हैं तो उन्नत नस्ल के वानर ही, लेकिन ब्रह्माण्ड को समझने की हमारी क्षमता हमें खास बनाती हैं'' वैज्ञानिक स्टीफन हांकिग का यह कथन ब्रह्माण्ड को समझने हेतु मानव मस्तिष्क को जन्म से ही उर्वर मानता है। शायद इसी से मानव ने आरम्भ से ही ब्रह्माण्ड और जीवन को समझने का तर्कसंगत प्रयास शुरू किया और लगातार करता ही जा रहा है। ब्रह्माण्ड के रहस्य मानव सभ्यता के सभी कालखण्डों में तत्कालीन मानवीय समझ के अनुसार बदलते रहे, प्रत्येक नई पीढ़ी ने नए–नए सवाल किए, उनका उत्तर नए सिरे से खोजा, ब्रह्माण्ड को नए सिरे से समझा, प्रत्येक नई सभ्यता पिछले विश्वासों और मान्यताओं को बदलकर नए–नए रहस्य खोलने में लगी रही। फिर भी पदार्थ के सृजन की क्रियाविधि के साथ ब्रह्माण्ड के बहुसंख्यक रहस्यों को जानना शेष है। इसी अद्भुत् मानसिक क्षमता के कारण मानव सभ्यता के प्रत्येक कालखण्ड में ब्रह्माण्ड को समझने की शुरूआत नए सवालों के साथ नए सिरे से की गई, प्रत्येक कालखण्ड में मानव समाज कुछ ही रहस्यों को खोल पाया और कुछ नए रहस्य पैदा कर दिए।

इसी क्रम में ब्रह्माण्ड को नए सिरे से समझने की स्वतंत्र शुरूआत असामान्य विश्व के प्रथम संस्करण–2000 से हुइ। असामान्य विश्व की विषय वस्तु

पर विचार मन्थन की शुरूआत सेवानिवृत श्री कैलाश चन्द्र जौहरी, श्री नाथू लाल शर्मा, श्री रमाशंकर शर्मा, श्री संजय भट्ट और स्वर्गीय प्रवीण कुमार शर्मा के सहयोग तथा तत्कालीन महालेखाकार, आडिट, श्री राकेश जैन जी के द्वारा दिए प्रेरणाकारी और उत्साहवर्धक निर्देशन और मागदर्शन से हुई। फिर सहयोग और प्रेरणा देने के लिए श्री मंगत राम अरोड़ा, सुभाष शर्मा, केसी तिवारी, रमाशंकर शर्मा, विनोद स्वामी, ओपी शर्मा, अशोक शर्मा आगे आए। इनकी सहायता से असामान्य विश्व में प्रकाशित अवधारणों पर विचार–विमर्श होता रहा और विज्ञान शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं पर गणनात्मक तथा परिकल्पनात्मक परन्तु सार्थक विचार मन्थन होता रहा। इसी से परिकल्पनाओं की कमियों और असंगताओं को दूर करके उन्हें इस तरह से संशोधित कर ठीक किया गया कि वे असामान्य विश्व माडल में समायोजित होती चली गईं। इसी क्रम में लेखक से नए–नए कर्मचारी–अधिकारी जुड़ते गए जिनमें श्री श्रीराम मीणा, तोताराम शर्मा, अर्जुन बुनकर, सुनील जैन, मुकुल दीक्षित प्रमुख हैं। श्री अजय माटा ने 13वें संशोधित संस्करण–दिसम्बर 2012 को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करने में लेखक की विशेष रूप से सहायता की। इनके द्वारा दिए गए सत्त उत्सहावर्धक सहयोग, शैक्षणिक सहायता और मार्गदर्शन से ब्रह्माण्ड की नई वैज्ञानिक समझ विकसित हुई जो हमारी पारम्परिक मान्यताओं से मेल खाती हैं और आधुनिक विज्ञान के ढांचे में फिट हो जाती है। इस नई समझ को हमने असामान्य विश्व मॉडल का नाम दिया।

पूर्व कुलपति, राजस्थान स्वास्थ विज्ञान विश्वविद्यालय, जयपुर एंव प्रख्यात न्यूरोलोजिस्ट पदम श्री डा॰ अशोक पानगड़िया ने असामान्य विश्व को वैज्ञानिक मानते हुए विषय विशेषज्ञों की बैठक कर एक नई परिकल्पना बनाने का सुझाव दिया, डा॰ एसएम शर्मा, अति॰ प्राचार्य मेडिकल कालेज जयपुर ने विज्ञान संस्थानों से असामान्य विश्व माडल पर मौलिक शोध और अनुसंधान करने की अपील की, डीन, मेडिकल कालेज झालावाड़, डा॰ वीडी बोहरा ने असामान्य विश्व को एक वैज्ञानिक सिद्धान्त का आरम्भिक स्वरूप कहा, तो डा॰ वीएस बल्दवा ने असामान्य विश्व माडल को मानव मस्तिष्क का निचोड़ कहा। छत्रपति साहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति श्री अशोक कुमार ने इसे मौलिक, वैज्ञानिक और अनूठा प्रयास कहा, राजस्थान विश्वविद्यालय की प्रो॰ पुष्पा श्रीवास्तव ने असामान्य विश्व को क्रान्तिकारी मॉडल बताया, हिन्दी पत्रकार और भाषाविज्ञ स्वर्गीय राजेन्द्रशकर भट्ट ने इसे असामान्य बौद्धिक साहस का परिणाम कहते हुए हिन्दी का विश्व स्तरीय वैज्ञानिक–सृजन बताया, भाषाविज्ञ देवर्षि कलानाथ शास्त्री ने इसे खोज की नई दिशाएं खोलने वाली पुस्तक कहा, एमएनआईटी जयपुर के मैटलरजिकल विभाग के प्रो॰ पीआर सोनी ने इसे मानव मस्तिष्क में तुफान पैदा करने वाला मानते हुए वैज्ञानिकों से इन मौलिक और नवीन विचारों का वैज्ञानिक लाभ लेने को कहा और इसरो तथा नासा जैसे वैश्विक संस्थानों से असामान्य विश्व माडल पर परीक्षण और

प्रयोग करने को कहा, इसी संस्थान के एसोशियट प्रो॰ प्रभात पडिंत ने इसे प्रकति की नई समझ माना, तो इलेक्ट्रोनिक के विभागाध्यक्ष डा॰ मोहम्मद सलीम इन्जीनियर ने असामान्य विश्व मॉडल के वैज्ञानिक आधारों की परख को जरूरी माना, एस॰एस॰ जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षक महाविद्यालय की प्राचार्या डा॰ यदु शर्मा ने इसे अभूतपूर्व और अविस्मरणीय योगदान की श्रृंखला कहा, एसएमएस अस्पताल के अध्ीक्षक डा॰ विरेन्द्र सिंह ने मौलिक और तर्क संगत कहते हुए इसे उदविकास की मान्यताओं को नई दिशा देने में सक्षम माना, एसएमएस मैडिकल कालेज के प्राचार्य डा॰ सुभाष नेपालिया ने इसे सरल भाषा में वैज्ञानिक दृष्टिकोण कहा, पूर्व अधीक्षक डा॰ एसके शर्मा ने इसे विचारोत्तेजक कहा, रेडियोथैरेपी विभागाध्यक्ष प्रो॰ डी॰पी॰ अग्रवाल ने इसे प्राणी उदविकास को समझाने का गम्भीर प्रयास माना, बाल रोग विशेषज्ञ डा॰ रामबाबू शर्मा ने इसे इन्नोवेटिव और नया प्रयास कहा, कानरोग विशेषज्ञ डा॰ मान प्रकाश शर्मा ने असामान्य विश्व को एक नया डाइमैन्शन कहा, डा॰ कमलेश खिलयानी ने इसे ग्रेट एफर्ट कहा, डा॰ एम एल शर्मा ने इसे भविष्य में स्थापित होने वाला विज्ञान मॉडल माना, किसी ने इसे ओरिजनल पीस ऑफ वर्क कहा, किसी ने ब्रह्माण्ड के विकास की नई अवधारणा कहा, किसी ने इसे समर्पित शिक्षको की देन कहा, तो प्रधान महालेखाकर कार्यालय के पूर्व कल्याण अधिकारी श्री आर॰सी॰ उनियाल ने इसको वैज्ञानिकों की सहायता से भविष्य में स्थापित होने वाला एक वैज्ञानिक सिद्धान्त कहा। इसी तरह किसी ने इसे नई वैज्ञानिक सोच को मनवाने की जिद माना, तो किसी ने इसे नवीन सिद्धान्त की रूपरेखा कहा।

असामान्य विश्व मॉडल प्राचीन भारतीय वैदिक मॉडल को नए प्रमाणों की सहायता से वैज्ञानिक जामा पहनाने के साथ उसके प्रायोगिक होने की क्रियाविधि भी प्रस्तुत करता है।

यह संस्करण कार्यालय प्रधान महालेखाकार राजस्थान के गणितीय पर्यावरण और राजधानी के हजारों समर्पित विज्ञान शिक्षकों द्वारा दिए गए अद्भुत सहायोग और मार्गदर्शन का जीवन्त परिणाम हैं और श्री मोदी जी के भारत को विश्व गुरु बनाने के संकल्प और आव्हान को समर्पित है। वैज्ञानिक संस्थानों द्वारा मौलिक प्रयोग और परीक्षण की शीघ्र शुरूआत की आशा के साथ बौद्धिक पाठकों के समक्ष उनके बौद्धिक और वैज्ञानिक सहयोग, सहायता, निर्देशन और मार्गदर्शन हेतु प्रस्तुत है।

दिनांकः—23.6.2014 सुरेश कुमार,

A BRAIN STORMING EXERCISE

"Asamanya Vishwa" is an interesting reading to understand the existing Universe and its functioning. All proposed ideas amount to a good hypothesis. However,the hypothesis need experimental facts for its existence. I understand Author will be able to correlate his imaginations with the existing scientific principles.The author deserves congratulations as he is working hard to refine the hypothesis proposed by him regarding, the evolution of solar system, water and air atmosphere, life, and human being and his organs.

The author proposes to launch a "multi component iceberg" containing essence of life like H_2O and biomolecules etc. at a temperature of -200^0 c, and after certain incubation period allow it to fall on the earth and study the changes taking place in it at every moment. If it is materialized by some international/national organizations like NASA, ISRO etc., it will be a strong foundation stone for the hypothesis proposed by the author in this book.

I would like to thank the author for writing the Asamanya vishwa which can create brain-storming in the minds of biological, technical and scientific people. The book is full of many novel ideas e.g. the author has proposed how control over electromagnetic field in a living being can delay/ avoid the death (Immortal). The scientific community may take advantage of such novel ideas (where ever possible) to convert them reality.

I would like to suggest that author can popularize this book by;

1. Publishing this book from an international publisher so that book comes in notice of scientific minds globally.
2. May contact a film producer who can produce a good fiction movie on it to make it reach to masses.
3. Author should participate in relevant international conference and present paper based on this book to get meaningful feedback from the scientific community.

– Professor Dr.P R Soni

Department of Metallurgical & Materials Engineering MNIT Jaipur. Ph. (O) 0141-2529027, 2702578 (Ext. 3246) Ph. (R) 0141-3293679, (M) 9983333422, E-Mail: psmt@rediffmail.com

अध्याय : 1

ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति : पृथ्वी की उत्पत्ति

ब्रह्माण्ड की उत्त्पत्ति के बारे में प्रचीन सभ्यताओं की सारी शुरुआती समझ और विश्वासों को मिथक घोषित करते हुए गैलिलियो से शुरु हुए आधुनिक विज्ञान ने फाइनली स्टैंडर्ड मॉडल आफ पार्टिकल फिजिक्स प्रस्तुत किया। इसके अनुसार ब्रह्माण्ड में सब कुछ 12 फर्मिऑन फील्डों और 3 बोसोन पार्टिकल फील्डों के बीच होने वाले इटरएक्शन से बना है। इस इंटरएक्शन में फर्मिऑन की सबसे कम मास वाली परन्तु स्टेबल फ्रस्ट जनरेशन ''अपक्वार्क, डाउनक्वार्क, इलेक्ट्रान और न्युट्रिनो'' ने भाग लिया। दूसरी और तीसरी जनरेशन के अधिक मास वाले आठ फर्मिआन अनस्टेबल होने के कारण फ्रस्ट जनरेशन के कम मास वाले स्टेबल फर्मिऑनों में डिकैय हो जाते हैं। ब्रह्माण्ड की शुरुआत, विस्तार, पदार्थ और नेचुरल फोर्सेज की उत्पत्ति और संचार और गतिशील स्पेस ओबजक्टों के निर्माण के बारे में बिगबैंग माडल सहित अनेक सिद्धान्त, थ्योरियां और परिकल्पनाएं है। इनमें से कुछ क्वांटम लैवल पर, तो कुछ बॉडी लैवल पर एप्लाई होते हैं, परन्तु कोई भी दोनों लैवल पर एक साथ एप्लाई नहीं होता। इसलिए ब्रह्माण्ड की कोई भी आधुनिक व्याख्या पूर्ण नहीं हैं जो सारे प्रश्नों को सुलझा सके।

आधुनिक थ्योरियों, सिद्धान्तों, मॉडलों और परिकल्पनाओं के गहन निरिक्षण और परीक्षण से एक नई समझ विकसित हुई। इसके आधार पर स्पेस को प्रधान, सबसे बड़ा, सर्वाधिक सक्रिय परन्तु सबसे महीन कम्पोनैन्ट फील्ड मानते हुए एक नई *असामान्य विश्व परिकल्पना* शुरु होती है।

''**असामान्य विश्व परिकल्पना**'' के अनुसार विद्युत्चुम्बकीय दृष्टि से शून्य स्पेस ही ब्रह्माण्ड का सर्वाधिक ऊर्जावान और गतिमान कम्पोनैंट है। ब्रह्माण्ड के निर्माण के लिए सबसे पहले अकेले स्पेस का जन्म हुआ। स्पेस एक बहुत ही महीन और हल्का परन्तु सर्वाधिक गतिशील, एवरपोटंट, एवरपावरफुल, एवरलास्टिंग और एवरएक्सिलरेटिंग एक्सपैंडिग फील्ड है। फिर यही स्पेस फील्ड फंडामैंटल मैटर पार्टिकल फील्डों ''फर्मिआन'' और फोर्स पार्टिकल फील्डों ''बोसोन'' में बदला। इन मैटर पार्टिकल फील्डों और फोर्स पार्टिकल फील्डों के बीच हुए इंटरएक्शन से सारा

का सारा पदार्थ बनकर गतिशील हो गया। इससे एक दूसरे से जुड़े हुए, गतिशील, विकसित होते और निरन्तर बदलते स्पेस ओबजक्ट बने जैसे कि तारे, ग्रह, उपग्रह, मोलिक्युलर क्लाउड और आकाशगंगा! कैसे ?

ब्रह्माण्ड का समस्त स्पेस 13700 करोड़ साल पहले अकेला ही एक छोटे से आकार में एक एवर पावरफुल फील्ड के रूप में एक बिन्दु ''असामान्य विश्व बिन्दु'' में कैद था। अचानक विस्फोट के साथ असामान्य विश्व बिन्दु से एक आउटवर्ड स्पीरली एक्सिलरेटिंग एक्पैन्डिंग स्पेस वेव प्रोपेगेट हुई जो कि एक स्पीरली आउटवर्ड एडवांसिंग फील्ड लाइन होती है। इस एक ओपन स्पीरली एक्सिलरेटिंग एक्सपैंडिंग वेव को हम प्राइम स्पेस वेव कहेंगे। प्राइम स्पेस वेव एक्सपैंड होते हुए डिस्क आकार में एक फ्लैट प्लेन में स्पीरली आगे बढ़ती जाती है।

स्पीरल एक्सपैंशन के साथ प्राइम स्पेस वेव पर असंख्य बिन्दु बनते जाते हैं। प्रत्येक बिन्दु से एक नई सैकेन्डरी स्पेस वेव का जन्म होता रहता है। सैकेन्डरी स्पेस वेव प्राइम स्पेस वेव की आइडैन्टिकल कापी होती है और इनका भी उसी तरह आउटवर्ड स्पीरली एक्सिलरेटिंग एक्सपैन्शन होता है और ये भी अपनी तरह की नई स्पेस वेव को जन्म देती रहती हैं, इसलिए इन्हें भी हम सैकेन्डरी स्पेस वेव ही कहेंगे। इससे अकेली एक प्राइम स्पेस वेव के चारों तरफ एक अण्डाकार प्लेन में एक्सपैंड और डैंस होता सैकेन्डरी स्पेस वेव जाल बनता जाता है। प्राइम स्पेस वेव पर लगातार बनते बिन्दुओं से नई नई सैकेन्डरी स्पेस वेव बनने में समय का अन्तर होता है, इससे एक्सपैंड होते स्पेस जाल के छोरों पर सैकेन्डरी स्पेस वेव कम दूरी तक एक्सपैंड होती है, इसलिए यह स्पेस जाल बीच में मोटा होता है और एंड या छोरों पर कम मोटा होता है। इससे ये जाल अण्डाकार में बना रहता है जो निरन्तर सारी दिशाओं में एक्सपैंड होता रहता है। यही स्टार्टिंग एक्सिलरेटिंग स्पीरली आउटवर्ड एक्सपैन्डिंग स्पेस है जो आज तक एक्सपैंड हो रहा है। इस समय इसमें न तो कोई फंडामैंटल पार्टिकल फील्ड होता है, न बोसोन फील्ड और न ही कोई अन्तरिक्षीय पिण्ड।

आउटवर्ड दिशा में स्पीरली एक्सपैंड होने वाली एक स्पीरल वेव के रूप में प्रत्येक सेकेन्डरी स्पेस वेव अपने सभी भागों पर समान रूप से एक्सपैंड होती जाती है, जैसे कि एक रबड़ खींचने पर सभी जगह से बढ़ता है। एक्सिलरेटिंग स्पीरल एक्सपैंशन से सैकेन्डरी स्पेस वेव हैड आउटवर्ड दिशा में स्परली बढ़ता जाता है।

इससे स्पेस वेव का एक निरन्तर बढ़ता जाल बनता जाता है। इस तरीके से ब्रह्माण्ड का सर्वाधिक बड़ा, गतिशील और ऊर्जावान कम्पोनेंट ''आउटवर्ड एवरएक्सपैंडिंग स्पेस'' अकेला ही बनता है और बढ़ती स्पीड से बढ़ता जाता है।

यद्यपि किसी इलेक्ट्रोमैग्नेटिक वेव से क्रिया नहीं करने के कारण अब तक ऐसी कोई भी स्पेस वेव ओबजर्व नहीं की गई है, परन्तु आधुनिक विज्ञान जन्य तकनिकि ज्ञान और उपकरणों की सहायता से कुछ प्रयोगों के द्वारा ''असामान्य विश्व स्पेस'' को एक्सपीरियंस करके वेलिडेड किया जाना सम्भव है, वेलिडेशन के लिए हम आगे प्रयोग प्रोपोज करेंगे।

एवर एक्सिलरेटिंग आउटवर्ड स्पीरली एक्सपैन्डिंग सैकेन्डरी स्पेस वेव से बना अण्डाकार जाल निरन्तर बढ़ता जाता है। एक सीमा के बाद सैकेन्डरी स्पेस वेव हैड स्पीरली आउटवर्ड के स्थान पर इनवर्ड स्पीरल दिशा में मुड़ जाता है। इनवर्ड स्पीरल दिशा में भी इसका एक्सपैंशन पहले की तरह ही जारी रहता है। इसी बिन्दु से आउटवर्ड एक्सपैन्डिंग सैकेन्डरी स्पेस वेव एक्सिलरेटिंग इनवर्ड एक्सपैन्डिंग स्पीरल स्पेस वेव में बदल जाती है। इनवर्ड और आउटवर्ड एक्पैंडिंग स्पेस वेवों के बीच कोई इटंरएक्शन नहीं होता और न ही वे एक दूसरे को इंटरसैक्ट करती हैं। इससे इनवर्ड स्पीरली एक्सपैंडिंग स्पेस का जन्म होता है। अब स्पेस में दो प्रकार की एक्सिलरेटिंग स्पीरली एक्सपैन्डिंग स्पेस वेव होती हैं। एक स्पीरली आउडवर्ड एक्सपैन्डिंग होती है और हर जगह मौजूद होती है। दूसरी स्पीरली इनवर्ड एक्सपैन्डिंग होती है, जो कुछ ही जगहों पर मौजूद होती है। इस प्रक्रिया से आउटवर्ड एक्सपैन्डिंग स्पेस के बीच बीच में असंख्य इनवर्ड एक्सपैन्डिंग स्पेस जोन बनते जाते हैं। इन दोनों प्रकार की सैकेंडरी स्पेस वेव से स्पेस फब्रिक्स या आइनस्टीन के स्पेस टाइम का निर्माण होता है।

प्रत्येक इनवर्ड एक्सपैन्डिंग स्पेस जोन एक स्फीयर होता है। इस स्फीयर की परिधि या सीमा पर आउटवर्ड स्पेस वेव इनवर्ड स्पेस वेव में बदल जाती है। यदि इनवर्ड स्पेस वेव की शुरुआत पर टैजेन्ट लाइन खीचकर सबको मिला दिया जाता है तो एक स्फीयर या बबल बनता है इसे हम प्राइम ग्रेविट बबल कहेंगे। इस स्फीयर से इनवर्ड स्पेस वेव शुरु होकर इसके केन्द्र की तरफ इनवर्ड स्पीरली एक्सिलरेटिंग एक्सपैन्ड होती है। इससे इनका वेव हैड इनवर्ड डायरक्शन में स्पीरली मूव होता जाता है।

इनवर्ड स्पेस वेव हैड की अत्यधिक कोयलिंग से प्रिंसिपल पार्टिकल फील्ड बनना और फिर इसके टूटने से लेप्टान और क्वार्क बीमों का जन्मः–

प्रत्येक इनवर्ड स्पीरली एक्सपैन्डिंग स्पेस वेव एक इनवर्ड स्पीरली एक्सपैंड होने वाला अननोन फील्ड है, यह फील्ड इनवर्ड स्पीरल लाइन में आगे बढ़ने वाले एक ओपन स्पीरली इनवर्ड एक्सपैंडिंग स्ट्रिंग के समान होता है। इसका वेव हैड इनवर्ड स्पीरल मोशन करते–करते आखिरी में एक ऐसी स्टेज में पहुंचता है जहां अब आगे इनवर्ड डायरक्शन में स्पीरल मोशन होने की कोई जगह नहीं होती। सम्पूर्ण वेव का एवर एक्सपैंशन होने से वेव हैड पर पीछे से एक इनवर्ड स्पीरल प्रेशर बनता रहता है। इससे वेव हैड कोयल होता जाता है। अन्त में अत्यधिक कोयलिंग से वेव हैड एक गुब्बारे के समान फूल जाता है और एक प्रधान पार्टिकल फील्ड में बदल जाता है। इसके बाद भी इनवर्ड स्पीरल एक्सपैंशन से बने इनवर्ड स्पीरल प्रेशर के कारण प्रधान पार्टिकल फील्ड रूपी वेव हैड 6–6 भागों में टूट कर क्वार्क और लैप्टान मैटर फील्ड पार्टिकलों में बदल कर दो बीमों में बदल जाता है। ये दोनों बीम प्रधान पार्टिकल फील्ड के 12 भागों में टूटने से जन्म लेते हैं और यहीं से दोनों बीम विपरीत दिशाओं में गतिशील हो जाते हैं। इसी प्रधान पार्टिकल फील्ड के टूटने के बिन्दु से इनवर्ड स्पेस वेव भी 12 भागों में बट जाती है और इन दोनों बीमों के पीछे रहते हुए सीधी गति करती है। इनकी दिशा इनवर्ड स्पेस वेव की दिशा के परपैन्डिकुलर होती है। इससे ये सीधी गति करती है। पीछे स्थित स्पेस वेव के लिनियर एक्सपैंशन से प्रत्येक पार्टिकल फील्ड सीधी या लिनियर गति करते है। इससे ये दोनों पार्टिकल बीम भी एक्सिलरेट होते रहते हैं। इनकी दिशा लिनियर होने के कारण इन्हें हम लिनियर स्पेस वेव कहेंगे जो प्रत्येक फर्मिऑन के पीछे होती है।

इनवर्ड स्पेस जोन के केन्द्र पर इसी प्रकार असंख्य लैप्टान और क्वार्क बीम बन कर विपरीत दिशाओं में लिनियर गतिशील हो जाते हैं। इस समय तक ये सभी पार्टिकल मासलैस होते है। पूरा लैप्टान बीम निगेटिवली चार्ज होता है इसके चारों तरफ निगेटिव इलेक्ट्रिक फील्ड होता है जो चारों तरफ फैलता रहता है। इसी तरह पूरा क्वार्क बीम पोजीटिवली चार्ज होता है, इसके चारों तरफ भी पोजिटिव इलेक्ट्रिक फील्ड होता है। मासलैस होने के कारण ये प्रकाश की गति से लिनियर डायरेक्शन में मोशन करते हैं। फडांमैंटल मैंटर पार्टिकल बीम के रूप में दोनों प्रकार के स्पेस में मूव करते है। इससे इनवर्ड एक्सपैन्डिंग स्पेस और आउटवर्ड एक्सपैन्डिंग स्पेस इन प्रकाश गति से गतिमान फंडामैंटल मैटर पार्टिकल बीमों से भर जाता है।

लिनियर स्पेस वेव के एवर एक्सिलरेटिंग एक्सपैन्शन एनर्जी से ये सभी फंडामैंटल मैटर पार्टिकल विशि ट फ्रिक्वंसी पर वाइब्रेट करते है, चार्ज रहते हैं और स्पिन करते हैं। इसी एक्सिलरेशन से इनकी काइनेटिक एनर्जी बढ़ती जाती है।

फंडामैंटल मैटर पार्टिकल फील्डों के बीच हुए इंटरएक्शन से न्युक्लिआई का जन्म :–

संयोग से एक इनवर्ड एक्सपैन्डिंग स्पेस जोन में पोजिटिवली चार्जड क्वार्क और निगेटिवली चार्जड लैपटान के दो बीम आमने सामने से उच्च गति से टकराते हैं। इससे क्वार्क और लैप्टान करोड़ों डिग्रि सै॰ तक गरम हो जाते है, इनकी काईनेटिक एनर्जी बहुत ज्यादा हो जाती है, इनका ओसिलेशन बहुत बढ़ जाता है और इस एनर्जी से इनमें मास का स जन होता है, इनकी गति कम हो जाती है और इनके बीच इटरएक्शन शुरु हो जाता है। इससे क्वार्कों और लैप्टान की अधिक मास वाली थर्ड जनरेशन और सैकेन्ड जनरेशन कम मास वाली फ्रस्ट जनरेशन के चारों फंडामैंटल पार्टिकलस ''अपक्वार्क, डाउनक्वार्क, इलेक्ट्रोन और न्युट्रिनो'' में डिकैय हो जाती है। इस मास डिफक्ट से मुक्त हुई एनर्जी से तीनों प्रकार के फंडामैंटल बोसोन पार्टिकल फील्ड ''फोटोन, ग्लुऑन और डब्लु और जेड बोसोन फील्ड'' बनते है।

स्ट्रोंग फोर्स या ग्लुऑन फील्ड एक टयूब की तरह तीन दिशाओं बढ़ता है और अपक्वार्क और डाउन क्वार्को को तीन तीन के ग्रुप में बांध देता है। इस स्ट्रोंग फोर्स की सहायता से दो पोजिटिव चार्जड अप क्वार्क और निगेटिवली चार्जड एक डाउन क्वार्क जुड कर ''प्रोटान'' में बदल जाते है। इसी तरह दो डाउन और एक अप क्वार्क बंधकर न्युट्रल न्युट्रोन में बदल जाते हैं। इनकी बाईंडिंग एनर्जी बहुत ज्यादा होती है। ये एनर्जी प्रोटोन बनते समय मुक्त होती है। इससे प्रोटोन स्टेबल हो होकर अत्यधिक एनर्जेटिक हो जाते हैं।

इससे एक इनवर्ड स्पेस जोन में अनगिनत इलेक्ट्रोन क्लाउड और प्रोटोन क्लाउड उच्च गति से स्वतंत्र विचरण करने लगते हैं। संयोग से लैप्टान क्लाउड और प्रोटोन क्लाउड पास पास आते हैं। विपरीत चार्ज के कारण ये दोनों एक दूसरे को आकर्षित करते है तो उनकी स्पीड कम हो जाती है। प्रोटोन के पोजिटिव चार्ज के कारण निगेटिवली चार्जड इलेक्ट्रोन क्लाउड आकर्षित होकर प्रोटोन के चारों तरफ दूर से ही चक्कर लगाने लगता है। इस प्रकार पदार्थ का प्लाज्मा स्टेट में जन्म होता है।

ताप कम होने पर प्रत्येक बेयर न्युक्लिआई ''प्रोटोन'' के चारों तरफ मंडराते इलेक्ट्रोन क्लाउड आकर्षित होकर पास आते हैं, तो प्रोटोन अपने पोजीटिव चार्ज से नेगिटिव इलेक्ट्रोन को पकड़ कर हाइड्रोजन एटम में बदल जाता है। इससे ब्रह्माण्ड हाइड्रोजन एटमों से भर जाता है जो उच्च लिनियर गति से गति करते है। इनके पीछे पीछे रहने वाली लिनियर मिनि स्पेस वेव हमेशा एक्सपैंड होता रहती है। प्रत्येक मिनि स्पेस वेव के हैड पर एक एटम होता है। इसलिए एटम स्पेस वेव के एवर एक्सपैंशन से निरन्तर एक्सिलरेटिंग गति करता रहता है। इससे इन एटमों की गति बहुत बढ़ जाती है, इनकी काईनेटिक एनर्जी भी बहुत अधिक हो जाती है, इनका ताप बहुत बढ़ जाता है।

न्युक्लियर फ्यूजन से ग्रेविटि बबल का जन्म और ग्रेविटि बबल के केन्द्र पर एक तारे का जन्म :–

संयोग से जब हाईली एनर्जाइज्ड और गतिशील हाइड्रोजन एटमों के दो बीम आमने सामने आकर टकराते हैं, तो दो हाइड्रोजन के न्युक्लिआई फ्यूज होकर एक ड्यूटिरियम में बदल जाते है और फिर एक ड्यूटिरियम और एक हाइड्रोजन फ्यूज होकर दो प्रोटान और एक न्युट्रोन युक्त अनस्टेबल हिलियम में बदल जाते है। फिर दो अनस्टेबल हिलियम एटम फ्यूज होकर एक नोरमल हिलियम में बदल जाते हैं। इससे कुल 26.7 मेगा इलेक्ट्रोन वोल्ट की एनर्जी मुक्त होती है।

एक नोरमल स्टेबल हिलियम एटम का जन्म होते ही न्युक्लियर फ्युजन से मुक्त 26.7 मेगा इलेक्ट्रोन वोल्ट एनर्जी से आग या उच्च ताप का एक गोला बनकर चारों तरफ फैलता जाता है। इससे इनवर्ड एक्सपैन्डिंग स्पेस का फैब्रिक्स इस स्थान रो चारों तरफ उठ जाता है या आउटवर्ड बैंड हो जाता है या आउटवर्ड कर्व हो जाता है। इससे हिलियम के चारों तरफ कोई भी स्पेस फैब्रिक्स नहीं रहता और एक खाली बबल बन जाता है, इसे हम स्टार्टिंग स्टेलर ग्रेविटि बबल कहेंगे। इस खाली बबल को भरने हेतु इस बबल की सारी स्फीरिकल सरफेस पर स्थित इनवर्ड स्पेस वेव से नई इनवर्ड स्पीरली एक्सपैंडिंग स्पेस वेव बनती है और वे इस बबल के केन्द्र तक स्पीरली इनवर्ड मूव करती है। हम इन्हें ग्रेविटेशनल स्पीरल वेव कहेंगे जो बबल की स्फीरिकल सरफेस से इनवर्ड स्पीरल गति करते हुए एक्सिलरेट होती रहती हैं। एक्सिलरेटिंग इनवर्ड स्पीरल एक्सपैन्शन के कारण इस केन्द्र तक पहुंचते पहुंचते ग्रेविटेशनल स्पीरल वेव हैड की गति बहुत अधिक हो जाती है। इससे स्टेलर ग्रेविटि

बबल के केन्द्र पर स्थित हिलियम एटम पर इनवर्ड स्पीरल प्रेशर बनता है। इस इनवर्ड स्पीरल प्रेशर से हिलियम एटम इस केन्द्र के चारों तरफ चक्कर लगाने लगता है।

यह स्टार्टिंग स्टेलर ग्रेविटि बबल हिलियम के आकार से खरबों गुना तक बड़ा होता है। ग्रेविटेशनल स्पीरल वेव में फोर्स होती है। यह फोर्स एटम और इससे बड़े पार्टिकल को इनवर्ड स्पीरली पुश करके ग्रेविटि बबल के केन्द्र की तरफ धकेलती है। ऐसे इनवर्ड स्पीरल प्रेशर को फिजिक्स में ग्रेविटेशनल पुल कहा जाता है। ग्रेविटेशनल स्पीरल वेव के इनवर्ड स्पीरल पुश के कारण कोई भी एटम और मॉलीक्यूल ग्रेविटि बबल में प्रवेश करते ही इसके केन्द्र की तरफ एक्सिलरेटिंग इनवर्ड स्पीरल मोशन करते हुए आगे बढ़ते जाते हैं। इससे एटम ग्रेविटि बबल के केन्द्र पर पहुंचते पहुंचते उच्च काइनेटिक एनर्जी प्राप्त कर लेते हैं और फिर इसके केन्द्र पर घूर्णन करते हिलियम एटम से टकराते हैं। इनका फिर फ्यूजन होता है और फिर हिलियम बनती है, कुछ मास गायब होकर एनर्जी में बदल जाता है। यह एनर्जी चारों तरफ फैलती है। इस एनर्जी के फैलाव से ग्रेविटि बबल बड़ा होता जाता है, इससे नई नई ग्रेविटेशनल स्पीरल वेव बनती जाती हैं और ग्रेविटि बढ़ती जाती है। परिणामस्वरूप ग्रेविटि बबल में अधिक हाइड्रोजन एटम प्रवेश करते हैं और पहले से अधिक गति अर्जित करते है। अधिक काईनेटिक एनर्जी के साथ इसके केन्द्र तक जाते है। केन्द्र से टकराकर फ्यूज होकर वे हिलियम में बदलते रहते है। इससे ग्रेविटि बबल फिर बड़ा होकर अधिक हाइड्रोजन एटमों को अपने अन्दर आने देता है। अब हाईड्रोजन एटम और भी अधिक गति से ग्रेविटि बबल के केन्द्र तक जाते हैं और फ्यूज होकर हिलियम में बदलते जाते हैं। इस तरह न्युक्लियर फ्यूजन बढ़ता जाता है, ग्रेविटि बबल बढ़ता जाता है और अधिक हाइड्रोजन एटम कैप्चर करता जाता है। इससे मुक्त एनर्जी से अब हिलियम भी फ्यूज होकर कार्बन में बदलने लगती है। इससे और अधिक एनर्जी बनती है और ग्रेविटि बबल बड़ा होता जाता है। इस तरह एक तारा बड़ा होता जाता है और इसी के साथ तारे का ग्रेविटि बबल लगातार बड़ा होने से इसकी ग्रेविटि भी बढ़ती जाती है।

परिकल्पित ग्रेविटेशनल स्पीरल वेव प्रोटोन और न्युट्रोन जैसे किसी भी सबएटोमिक पार्टिकल पर कोई क्रिया नहीं करती है, क्योंकि इनका मास एटम के मास की तुलना में बहुत कम होता है। शायद इसी कारण से ग्रेविटि को स्टैंडर्ड माडल में शामिल नहीं किया गया है।

तारे में हाइड्रोजन फ्यूजन से शुरु हुए बर्निंग प्रोसेजेस से हिलियम कार्बन में, फिर कार्बन से नाइट्रोजन और नाइट्रोजन से आक्सिजन में बदलते हुए अन्त में इसकी कोर आइरन कोर में स्टेबल हो जाती है। इस प्रक्रिया में अपार एनर्जी मुक्त होती है और इससे ग्रेविटि बबल बहुत बड़ा और पावरफुल हो जाता है। इससे अन्त में आइरन कोर का इम्पलोजन होता है और सुपरनोवा विस्फोट होता है। इससे इसका ग्रेविटि बबल बहुत बहुत बड़ा और पावरफुल हो जाता है, इससे अन्तरिक्ष में बहुत सारा एनर्जेटिक पदार्थ दूर दूर तक फैल जाता है। सुपरनोवा के बाद बची कोर न्युट्रोन स्टार या ब्लेक होल में बदल जाती है। ब्लेकहोल का ग्रेविटि बबल एक इनवर्ड स्पेस जोन में सबसे बड़ा और पावरफुल हो जाता है। इस ग्रेविटि के कारण इस विशाल ग्रेविटि बबल में आते ही तारों के ग्रेविटि बबल से बाहर छिटका पदार्थ अब तारे की तरफ नहीं जाकर ब्लेकहोल की तरफ जाता है। यह पदार्थ ब्लेकहोल तक पहुंचते पहुंचते इतनी इनवर्ड स्पीरल गति प्राप्त कर लेता है कि वह इस में गिरते ही पुनः लैप्टान और क्वार्क के बीमों में बदल जाता है और स्पेस में विपरीत दिशाओं में गतिशील हो जाता है। ब्लेक होल के पास ग्रेविटेशल स्पीरल वेव इतनी एक्सिलरेट हो जाती है कि प्रकाश को भी इनवर्ड स्पीरली पुश करने लगती है और इससे प्रकाश भी ब्लेकहोल में प्रवेश कर दो दिशाओं में बंट कर दूसरे इनवर्ड स्पेस जोन में चला जाता है। इसीलिए ब्लेक होल को नए ब्रह्माण्ड का द्वारा कहा जा सकता है।

ग्रहों का जन्म :– तारे में न्यूक्लियर फ्यूजन से मुक्त एनर्जी से आउटवर्ड थर्मल प्रेशर बनता है। इससे इसकी आउटर लेयर एक्सपैंड होती है और इससे तारे का बहुत सारा पदार्थ छिटक कर तारे से बाहर आ जाता है, परन्तु यह सारा पदार्थ स्टेलर ग्रेविटि बबल के अन्दर ही रहता है। तारे से छिटके एटमों में से चार हाइड्रोजन एटम इतनी काईनेटिक एनर्जी अर्जित करते है कि वे फ्यूज होकर एक स्टेबल हिलियम एटम बनाते हैं। इस प्रक्रिया में तारे के बाहर परन्तु तारे के ग्रेविटि बबल के अन्दर ही एक नया ग्रेविटि बबल बनता है जो बनते ही तारे की परिक्रमा करने लगता है। इसे हम प्लेनेटरी ग्रेविटि बबल कहेंगे। प्लेनेटरी ग्रेविटि बबल में तारे की आउटर कोर से छिटका पदार्थ प्रवेश करते ही तारे के स्थान पर प्लेनेटरी ग्रेविटि बबल के केन्द्र की तरफ इनवर्ड स्पीरल गति करता है। इस पदार्थ में अधिकांशतया हाइड्रोजन और हिलियम एटम होते हैं। इसके केन्द्र तक जाते जाते इन एटमों की गति बहुत अधिक हो जाती है, उनकी कायनेटिक एनर्जी बहुत बढ़ जाती है। इससे प्लेनेटरी बबल के केन्द्र पर न्युक्लियर फ्यूजन बढ़ता जाता है और अधिक एनर्जी

मुक्त होती है। इससे प्लेनेटरी ग्रेविटि बबल बढ़ता जाता है और तारे से दूर होता जाता है। प्लेनेटरी बबल के केन्द्र पर बनने वाले पिण्ड में न्युक्लियर फ्यूजन से स्टेबल आइरन न्युक्लिआई से भी हैवी न्युक्लिआई बनते जाते हैं। इससे मुक्त एनर्जी से प्लेनेटरी ग्रेविटि बबल का आकार बढ़ता जाता है। अब पहले से अधिक एटम और मॉलीक्यूल इसमें आते है। अन्त में न्युक्लियर फ्यूजन से यूरेनियम जैसे भारी एटम बन जाते है। इस समय तक इसका ताप इतना अधिक होता है कि सारा पदार्थ गैसीय स्टेट में होता है। फिर प्लेनेटरी ग्रेविटि बबल के परिक्रमा क्षेत्र में उपस्थित तारे से छिटका पदार्थ समाप्त हो जाता है और न्युक्लियर फ्यूजन बन्द हो जाता है। इससे इसका ताप कम होने लगता है। भारी न्युक्लिआई इसके केन्द्र पर जमने लगते है और ऊपर हल्के पदार्थ लेयर बाई लेयर एक्त्रित होते जाते हैं। उण्डा होने पर आइरन से भारी न्युक्लिआई अनस्टेबल होकर रेडियोएक्टिव बन जाते हैं और ये न्युक्लियर फीजन करके हल्के न्युक्लिआई में बदलते जाते हैं। न्युक्लियर फीजन से मुक्त होने वाली एनर्जी से ग्रह का ताप स्टेबल रहने लगता है और इसका ग्रेविटि बबल स्टेबल हो जाता है। इस स्टेबल स्टेट में एक ग्रह लगभग 500 करोड़ साल रहता है।

इस तरह एक ग्रह बनता है जो अपने ग्रेविटि बबल के केन्द्र पर रहकर अपने अक्ष पर घूर्णन करते हुए तारे की परिक्रमा करता रहता है और अपने ग्रेविटि बबल के बड़े होने के साथ साथ तारे से दूर होता जाता है। क्योंकि तारे से मुक्त एनर्जी से तारे का ग्रेविटि बबल बड़ा होता जाता है। इससे प्लेनेटरी ग्रेविटि बबल तारे से दूर होता जाता है। जब तारा स्टेबल हो जाता है, तब इसके ग्रेविटि बबल का फैलाव रुक जाता है। इससे इस समय के दौरान ग्रह के ग्रेविटि बबल और तारे के बीच की दूरी स्थिर हो जाती है। इस प्रक्रिया से तारे के चारों तरफ अनेक प्लेनेटरी बबल बनते है और फिर इनके केन्द्र पर ग्रह बन जाते हैं।

एक प्लेनेटरी ग्रेविटि बबल में भी ग्रह से छिटके पदार्थों में से इसी तरह चार हाइड्रोजन एटम फ्यूज होकर एक स्टेबल हिलियम में बदलते है और एनर्जी मुक्त होती है। इस एनर्जी से प्लेनेटरी ग्रेविटि बबल के अन्दर स्थित प्लेनेटरी ग्रेविटेशनल स्पीरल वेव बाहर की तरफ कर्व होकर एक खाली बबल बनाती है। इसको भरने के लिए इस बबल की सरफेस से नई ग्रेविटेशनल स्पीरल वेव बनती है। इससे प्लेनेटरी ग्रेविटि बबल के अन्दर ही एक नया ग्रेविटि बबल बनता है जो प्लेनेटरी बबल के

केन्द्र की परिक्रमा करने लगता है। इसे हम सेटेलाइट ग्रेविटि बबल कहेंगे। इस सेटेलाइट ग्रेविटि बबल के केन्द्र पर ग्रह के समान ही एक उपग्रह बनता है। सेटेलाइट ग्रेविटि बबल के केन्द्र पर स्थित उपग्रह अपने ग्रेविटि बबल के साथ ग्रह की परिक्रमा करता रहता है। चूंकि ग्रह के ग्रेविटि बबल की ग्रेविटेशनल स्पीरल वेव अब इस सेटेलाइट ग्रेविटि बबल के अन्दर नहीं जाती हैं क्योंकि वे वहां से वे बाहर की तरफ कर्व हो जाती हैं, इसलिए अब ग्रह की ग्रेविटि उपग्रह को प्रभावित नहीं कर सकती है, अब ग्रह की ग्रेविटि उपग्रह को ग्रह की तरफ नहीं धकेल सकती है, प्लेनेटरी ग्रेविटेशनल स्पीरल वेव अब सेटेलाइट ग्रेविटि बबल के चारों तरफ रहते हुए इसे ग्रह के चारों तरफ चक्कर लगाने के लिए मजबूर करती हैं। इसलिए उपग्रह ग्रह की परिक्रमा करता है और अपने अक्ष पर घूर्णन करता है। इस तरह किसी तारे की ग्रेविटि ग्रह को, ग्रह की ग्रेविटि उपग्रह को प्रभावित नहीं करती है बल्कि उनके ग्रेविटि बबल के माध्यम से तारा ग्रह को और ग्रह उपग्रह को अपनी कक्षा में बनाए रखता है।

ग्रह और उपग्रह का भविष्य :– सुपरनोवा से फैला पदार्थ बहुत ज्यादा एनर्जेटिक होता है। इसमें से जब हाइएनर्जेटिक हाइड्रोजन एटम किसी तारे या ग्रह के आसपास पहुंच कर वहां न्युक्लियर फ्यूजन शुरु करके हिलियम में बदलकर ग्रेविटि बबल बनाते हैं। यदि यह प्रक्रिया किसी प्लेनेटरी ग्रेविटि बबल में होती है, तो इसमें एक उपग्रह बन जाएगा। यदि यह प्रक्रिया स्टेलर ग्रेविटि बबल में होती है तो उसमें एक ग्रह बन जाएगा। यदि यह प्रक्रिया किसी तारे के ग्रेविटि बबल के बाहर होती है तो इससे एक तारा बनेगा, इसकी शुरुआत भी एक हिलियम एटम बनने से ही होती है।

सुपरनोवा विस्फोट से अपार पदार्थ स्पेस में दूर तक फैल जाता है और इससे मुक्त एनर्जी से इसका ग्रेविटि बबल बहुत बड़ा हो जाता है। अब इस सुपरनोवा ग्रेविटि बबल में नए नए ग्रेविटि बबल बनते हैं और इसमें सुपरनोवा से फैला पदार्थ मौजूद रहता है जो ग्रेविटि बबल में जाकर इसके केन्द्र पर एक स्पेस ओबजक्ट में घनिभूत हो जाता है। सुपरनोवा से कुछ पदार्थ ग्रहों पर जाकर उनमें न्यक्लियर फ्यूजन शुरु कर देता है। इससे ग्रह का ग्रेविटि बबल बड़ा होने लगता है और इसमें अधिक पदार्थ आता है। इससे ग्रह धीरे धीरे तारे में बदल जाता है और इसके उपग्रह ग्रहों में बदल जाते हैं।

इससे इस सुपरनोवा ग्रेविटि बबल में तारे, ग्रह और उपग्रह बनते जाते हैं, बड़े होते जाते हैं। इससे ब्रह्माण्ड बनता, बढ़ता और फैलता जाता है। अन्त में ब्लेकहोल के चारों तरफ असंख्य तारे, ग्रह, और उपग्रह बनकर आकाशगंगा बन जाती हैं।

उपग्रह से ग्रह और तारे बनते हैं। इससे यह समझा जा सकता है कि उपग्रह तारे का बाल रूप है और ग्रह किशोर अवस्था है, तारा युवा अवस्था है और सुपरनोवा इसका अन्त है। तारे की लाइफसाइकिल एक स्टेबल हिलियम एटम बबने से शुरु होती है और फिर उपग्रह, ग्रह और तारे के फेज से गुजरते हुए एक ब्लेकहोल में पूरी होती है।

सबसे पहले उपग्रह बड़े होकर तारे के ग्रह में बदल कर तारे के चारों तरफ परिक्रमा करते रहते है। फिर तारे के ग्रह भी धीरे धीरे तारों में बदलते जाते है। ग्रह से बना नया तारा अपने पेरेन्ट तारे के चक्कर पहले की तरह ही काटता रहता है। फिर नए तारे के भी इसी तरह ग्रह बन जाते है और वे भी बड़े होने लगते हैं। इससे एक इनवर्ड स्पेस जोन में बने एक प्रथम तारे के चारों तरफ अनेक तारे और ग्रह बनते जाते हैं जो प्रथम तारे के चक्कर लगाते है। यह प्रथम तारा अन्त में एक ब्लेक होल में बदल जाता है। इससे एक आकाशगंगा बन जाती है। फिर आकाशगंगा के ग्रेविटि बबल में नया तारा ब्लेक होल में बदलकर एक नई आकाशगंगा में बदल जाता है।

यह सब प्रथम स्टेलर ग्रेविटि बबल के अन्दर होता है जो तारों और ग्रहों के बड़े होने से मुक्त एनर्जी से इतना बड़ा होता जाता है कि उसमें अनेक आकाशगंगाए बन जाती है। ये सभी अपने अपने ग्रेविटि बबल के द्वारा एक दूसरे से जुड़ी रहती हैं और एक दूसरे की परिक्रमा करती रहती हैं। इससे फिलामैन्ट बन जाता है जिसमें अनेक आकाशगंगाए होती है। इन ग्रेविटि बबलों के कारण से हमारी आकाशगंगा लगातार बड़ी होती जा रही है, परन्तु इसके सभी ओबजक्ट एक दूसरे से ग्रेविटि बबलों से जुड़े रहते हैं। इस कारण उच्च गति से घूमने के बावजूद उसके ओबजक्ट इससे इजेक्ट नहीं होते हैं। वैज्ञानिक इसका कारण डार्क एनर्जी और डार्क मैटर से बनी ग्रेविटि को मान कर उसकी खोज में जुटे हैं। जबकि इसका कारण ग्रेविटि बबल हैं। एक बड़े होते ग्रेविटि बबल के अन्दर बनने वाले और फैलने वाले ग्रेविटि बबलों के केन्द्र पर बने स्पेस ओबजक्टों के कारण ही आकाशगंगा, तारे, ग्रह और उपग्रह

एक दूसरे से बधें रहते हैं, फैलते रहते है, बड़े होते रहते हैं, घूर्णन करत रहते हैं और एक दूसरे से दूर होते रहते हैं, परन्तु अपने अपने ग्रेविटि बबल से बाहर नहीं जाते। इस तरह सारे स्पेस ओबजक्ट अपने ही ग्रेविटि बबल से प्रभावति होते हैं वे किसी भी दूसरे स्पेस ओबजक्ट की ग्रेविटि से प्रभावित नहीं होते हैं।

दूसरे इनवर्ड स्पेस जोन में भी इसी तरह आकाशगंगाओं का फिलामैंट बनता है। दो फिलामैंटों के बीच आउटवर्ड एक्सिलरेटिंग स्पीरली एक्सपैंडिंग स्पेस होता है जो निरन्तर बढता जाता है और इससे आकाशगंगाओं के फिलामैंट एक दूसरे से दूर होते रहते है। इससे आकाशगंगाओं के बीच का स्पेस बढता जाता है, जिसे हब्बल ने ओबजर्व किया है। इस तरह इस परिकल्पित प्रक्रिया से यह ब्रह्माण्ड बनता और बढ़ता जाता है और अनन्त होता जाता है।

मॉलीक्यूलर क्लाउड :– सुपरनोवा से छिटके पदार्थ से मॉलीक्यूलर क्लाउड बनते रहते हैं, इनमें प्रधानतया हाइड्रोजन, हिलियम, भारी न्युक्लिआई और ओरगेनिक सब्सटैंसों के साथ धूल कण भी होते है जो तारे में सुपरनोवा से पहले ही बन जाते हैं। वैज्ञानिक मॉलीक्युलर क्लाउड को तारों की नर्सरी कहते हैं। परन्तु इसमें एक तारा वैसे ही बनता है जैसे कि प्रथम तारा। प्रथम तारे और इसके बाद बने तारों में अन्तर यह है कि मॉलीक्युलर क्लाउड के बीच बना तारा बहुत जल्दि बनेगा। क्योंकि एक स्टेबल हिलियम एटम के बनने से बने ग्रेविटि बबल में मॉलीक्युलर क्लाउड का पदार्थ बहुत जल्दी आएगा। इससे इसका ग्रेविटि बबल बढ़ता जाएगा। अब पहले से अधिक पदार्थ इसमें आएगा। इससे तारा बन जाएगा।

ग्रहों में आइरन से भारी न्युक्लिआई बनते है। फिर इनके बीच हुई रासायनिक क्रियाओं से कम्पाउंड बनते है। इससे चटटानें, पानी और अन्य पदार्थ बनते हैं। इसलिए ग्रहों से बने तारों में ही हाइड्रोजन और हिलियम के साथ आईरन से भी भारी न्युक्लिआई और ओरगेनिक सब्सटैंसों के साथ धूल कण भी होते है जो ग्रह के तारे में बदलने की प्रक्रिया में छिटक कर मॉलीक्यूलर क्लाउड का भाग बनते रहते है। इन मांलीक्यूलर क्लाउडों के बीच यदि हाइड्रोजन फ्यूजन से स्टेबल हिलियम एटम बनता है तो इनमें ग्रेविटि बबल बनकर नया तारा बनने लगता है। यदि किसी तारे के ग्रेविटि बबल में ये मॉलीक्यूलर क्लाउड चले जाते हैं तो प्लेनेटरी ग्रेविटि बबल बनकर उसके केन्द्र पर एक ग्रह बनता है।